मूल्य: १०.०० रूपया

तित्थयर

वर्ष : ३० अंक : ०५ अगस्त २००६

॥ जैन भवन ॥

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३० अंक - ०५, अगस्त २००६

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 006
Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	अष्टापद यात्रा : साहित्यिक समदृष्टि		२१३
२.	योगशतक	डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी	२२९
३.	सिंहल की राजकन्या (**सुदर्शना**)	आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.	२३९

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

अष्टापद यात्रा : साहित्यिक समदृष्टि

(दिनांक : २८/०५/२००६ — दिनांक : २१/०६/२००६)

आज से लगभग ६ वर्ष पूर्व, अष्टापद के ऊपर तित्थयर पत्रिका का विशेषांक निकाला था। जैन साहित्य में वर्णित अष्टापद कैलाश का विवरण बार-बार प्रेरित करता था अष्टापद के साक्षात् दर्शन करने को। जैसे-जैसे विषय की गहनता ने शोध का आकार लिया यह भावना और भी बढ़ती गई। डॉ. रजनीकान्त शाह की न्यूयार्क में अष्टापद का स्वरूप बनाने की पहल, रत्नों की भव्य तीर्थंकर मूर्तियों की प्रदर्शिनी ,उनसे इस विषय पर चर्चा, अहमदाबाद में अष्टापद पर सेमिनार तथा दिल्ली में अष्टापद किताब का विमोचन इस प्रकार सारी कड़ियां जुड़ती गई और इस गुरुत्व विषय पर लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ। डॉ. रजनी कान्त शाह न्यूयार्क में अष्टापद का निर्माण ही नहीं करा रहे बल्कि इसकी खोज में भी वह अग्रणी है। उन्होंने अष्टापद की यात्रा का आयोजन किया। उन्हीं की प्रेरणा और सहयोग से जो अभी तक एक कल्पना थी उसके साकार रूप का दर्शन करने का हमें अवसर मिला।

जिस रोमांचक यात्रा की कल्पना हमने वर्षों पहले की थी उस यात्रा की शुरुआत दिनांक २८/०५/२००६ को दिल्ली से प्रारम्भ हुई। आई. सी. ८१३ से हम लोग काठमाण्डू के लिये २ बजकर ४५ मिनट पर रवाना हुए। शाम को काठमाण्डू पहुँचने पर सभी औपचारिकताएं पूरी होने पर हम लोग होटल अन्नपूर्णा के लिए

रवाना हुए। एयरपोर्ट पर हमारे टीम प्रबन्धक श्री योगेश कोठारी मौजूद थे। उनके साथी श्री किरण लामा ने होटल पहुँचने पर हमारी टीम का स्वागत किया।

टीम के सदस्य :

१) डॉ. रजनीकान्त शाह
२) डॉ. श्रीमती निरन्जना शाह
३) श्री विमल बोरडिया
४) श्रीमती उमा बोरडिया
५) श्री भरत हंसराज शाह
६) डॉ. जीतेन्द्र बी. शाह
७) डॉ. अभय कासलीवाल
८) डॉ. पी. एस. ठक्कर
९) डॉ. किरीट गोसालिया
१०) श्री योगेश कोठारी
११) मुनि श्री मृगेन्द्र विजय जी महाराज
१२) डॉ. श्रीमती लता बोथरा

रात्रि भोजन के पश्चात् सभी सदस्यों की बैठक हुई तथा विचार विमर्श के पश्चात् आगे की यात्रा और अगले दिन के प्रोग्राम से सभी को अवगत कराया गया। दिनांक २९/०५/२००६ को सुबह नाश्ते के बाद हम लोग पशुपतिनाथ मन्दिर देखने गये। भीड़ अत्यधिक थी। किसी तरह मूल मन्दिर के अन्दर दर्शन किये। कहते है मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है परन्तु मूल नायक पशुपति नाथ की पंचमुखी मूर्ति एवं शिवलिंग अर्वाचीन मालूम होते है। पास में भैरो जी की मूर्ति के आगे आज भी बलि दी जाती है यह देखकर आश्चर्य हुआ। वहाँ से हमलोग केसर लाइब्रेरी गये जहाँ नेपाल के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री हुलासमल जी गोलेछा और श्री हुकुमचन्दजी दूगड़ हमारी प्रतीक्षा

कर रहे थे। उनसे मिलने का समय पूर्व में ही निश्चित हो चुका था। उन्होंने कुछ विद्वानों ,शोधकर्ताओं और पुरातत्व वेत्ताओं को भी आमंत्रित किया था। बैठक का प्रारम्भ मुनि जी के मंगलाचरण से हुआ। आपस में सभी से परिचय के पश्चात् डॉ. शाह ने न्यूयार्क में निर्माणाधीन अष्टापद के विषय में एवं भरत भाई शाह ने अष्टापद की खोज के विषय में व्योरा देकर वहाँ के चित्रों की सी.डी. सबको दिखाई। उल्लेखनीय है कि श्री भरत भाई शाह पहले तीन बार कैलाश अष्टापद की यात्रा कर चुके है और यह उनकी चौथी यात्रा का प्रारम्भ था। उनके अनुभव एवं संस्मरण हमारी इस खोज यात्रा के प्रमुख आधार थे। श्री हुलासमल जी गोलेछा ने नेपाल में जैन धर्म के अवशेषों एवं नेपाल स्थित पुलहाश्रम (पुराणों के अनुसार ऋषभदेव की तपस्थली) के विषय में जानकारी दी। विष्णुपुराण के इस श्लोक से भी यह पता चलता है कि तीर्थंकर ऋषभदेव तप करने के लिये पुलहाश्रम गये थे।

न तेष्वस्ति युगाव क्षेत्राष्वष्टसु सर्वदा।। २६

हिमाह्वयं तु वै वर्ष नाभेरासोन्महात्मनः।
तस्यर्षभोऽभवत्पुत्रो मरुदेव्यां महाद्युतिः।। २७

ऋषभाद्भरतो जज्ञ ज्येष्ठः पुत्रशतस्य सः।
कृत्वा राज्यं स्वधर्मेण तथेष्टा विविधान्मखान्।। २८

अभिषिच्य सुतं वीरं भरतं पृथिवीपतिः।
तपसे स महाभागः पुलहस्याश्रम ययौ।। २९

(विष्णुपुराण, द्वितीयांश अध्याय १)

'महात्मा नाभि हिमनामक वर्ष के स्वामी थे, उनकी पत्नी मेरुदेवी से अत्यन्त कान्तिवाला ऋषभ नामक एक पुत्र हुआ। ऋषभ के एक सौ पुत्र हुए, जिनमें भरत सबसे बड़े थे। महाभाग राजा ऋषभदेव

धर्मपूर्वक राज्य चलाते हुए अनेक यज्ञों के अनुष्ठान करके अन्त में भरत को राज्य देकर तप करने के लिए पुलहाश्रम को गये।'

डॉ. जीतेन्द्र शाह ने विषय के महत्व को रखते हुए सभी के सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। श्री गोलेछा जी एवं उपस्थित सभी लोगों ने इस शोध के प्रति अत्याधिक उत्साह दिखाया और अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। वहाँ से सभी श्री गोलेछा जी के घर भोजन के लिए पधारे। परिवारजनों ने बड़ी ही आत्मीयता से शुद्ध और स्वादिष्ट भोजन कराया। उनका पुस्तकालय भी देखा जिसमें जैन ग्रन्थों का विशेष कर आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी के ग्रन्थों का महत्वपूर्ण संग्रह था। वहाँ से हमलोग स्वंयभू मंदिर देखकर होटल पहुँचे। डॉ. काशीनाथ जो बौद्ध दर्शन के विद्वान है उनके साथ भी हमारा सम्पर्क हुआ। इस शोध कार्य में उनका निरन्तर सहयोग हमें मिला। तिब्बती ग्रन्थों के अनुवाद का कार्य भी उनके द्वारा कराया जाने का निश्चय किया गया। शाम को सात बजे हम लोग जैन मंदिर गये जहाँ पर दिगम्बर मंदिर नीचे और श्वेताम्बर मंदिर ऊपर में निर्मित है और पास में उपाश्रय भी है। मंदिर का दर्शन करने के पश्चात् संलग्न हॉल में गये जहाँ समाज के प्रमुख लोग उपस्थित थे। सभी का परस्पर परिचय होने के बाद मुनि मणिभद्र जी एवं मुनि मृगेन्द्र विजय जी प्रवचन के बार्द डॉ. शाह एवं भरत भाई ने अष्टापद यात्रा के विषय में बताया। श्री हुलासमल जी ने एक लेख दिया जिसमें भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री कोयराला द्वारा भगवान् महावीर का जन्म स्थान नेपाल में बताया गया था। काफी चर्चा के बाद सभी की यह राय बनी कि इस प्रकार के शोध कार्य की आज बहुत आवश्यकता है और इसके लिये यथा सम्भव प्रयास किये जाने चाहिए। रात में होटल वापिस आकर भोजन के पश्चात् अगले दिन के प्रोग्राम के विषय में सभी को बताया गया।

दिनांक ३०/०५/२००६ को सुबह आठ बजे हमलोग काठमाण्डू एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। साढ़े दस बजे एयरचाइना की फ्लाइट से कड़ी सुरक्षा सम्बन्धी जाँच से गुजरकर ल्हासा के लिये रवाना हुए। ल्हासा का अर्थ है भगवान का स्थान। ल्हासा तिब्बत की राजधानी है यह लगभग बारह हजार फुट पर अवस्थित है। तिब्बत का क्षेत्र वर्तमान में चीन के आधीन है। हमारा जहाज माउन्टएवरेस्ट के काफी नजदीक से गुजरा जिसके कारण हमें माउण्ट ऐवरेस्ट की मनोरम झलक देखने को मिली। ल्हासा एयरपोर्ट पर उतरने के बाद भी कड़ी सुरक्षा प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। वहाँ से हमलोग ल्हासा शहर की ओर रवाना हुए जो करीब ४५ मिनट का रास्ता है। रास्ता बहुत ही स्वच्छ और सुन्दर था। रास्ते में एक पहाड़ पर बुद्ध की मूर्ति चित्रित देखी। ल्हासा में होटल हिमालय में ठहरने की व्यवस्था थी। रात्रि भोजन के पश्चात् डॉ. रजनीकान्त शाह द्वारा योगेश कोठारी और किरणलामा से विचार विमर्श के बाद आगे का कार्यक्रम निर्धारित किया गया।

दिनांक ३१/०५/२००६ को १० बजे हमारी टीम 'ड्रेपुंग बिहार' में गयी। यह विश्व का सबसे बड़ा बौद्ध विहार माना जाता है। वहाँ के लामाओं से बात-चीत की गई जिसमें ऋषभदेव और अष्टापद के सम्बन्ध में भी चर्चा हुई। तीन बजे 'जोखङ्' मंदिर में गये। दिनांक ०१/०६/२००६ को सुबह ९.३० बजे हम लोग सभी 'सेरा बिहार' को देखने गये और वहाँ के मुख्य लामाओं से मिले। यह दूसरा बड़ा विहार है। दुपहर के भोजन के पश्चात् २ बजे हम लोग पोटाला पैलेस देखने गये जो कि 'विश्व सांस्कृतिक संरक्षण स्थान' माना गया है। यह जितना बाहर से सुन्दर से है उतना ही अन्दर से भी विशाल और देखने योग्य है। लगभग सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से बौद्ध धर्म की अनगिनत मूर्तियां यहां पर देखने योग्य है। इसका आरम्भिक स्वरूप ७वीं शताब्दी में बना था। इसमें १००० कमरे है। यह ११९ मीटर ऊँचा

और १३ मंजिला है। पुराने प्रसाद का स्वरूप युद्ध में नष्ट हो गया तब १७वीं शताब्दी में पंचमदलाई लामा ने इसका पुनः निर्माण किया। यहाँ दलाईलामा पांचवें से लेकर तेरहवें दलाई लामा तक के पिरामिड निर्मित है जिनमें पंचम दलाईलामा का पिरामिड प्रमुख है इसमें ३४३७ किलो सोना ,२०,००० हीरे और मोती जड़े हुए है। मिलरेपा, पद्म सम्भव, शान्त रक्षित आदि धर्म गुरुओं के स्तूप भी बने हुए है। यह तिब्बत में बौद्ध धर्म का गढ़ माना जाता है।

दिनांक ०२/०६/२००६ को हमलोगों ने अपने गन्तव्य स्थान (कैलाश) की ओर प्रस्थान किया। लगभग १२०० किलो मीटर की यात्रा थी। हमारे साथ चार बड़ी जापानी गाड़ियाँ थी और एक ट्रक जिसमें खाने-पीने की व्यवस्था एवं टेन्ट आदि सामान था। साथ में ग्यारह व्यक्तियों का स्टाफ था जिसमें दो अनुवादक एक फोटोग्राफर और शेरपा आदि थे। साढ़े बारह बजे लगभग हमलोग कंगाबेल चोटी पर पहुँचे जो ४९९० मीटर ऊंचाई पर है। शांम को हमलोग 'Gyantse' में रुके। ०३/०६/२००६ शनिवार को हम 'Gyantse' से रवाना हुए और 'Shigatse' होते हुए शाम को 'Lahtse' में ठहरे। ०४/०६/२००६ को सुबह नाश्ते के बाद 'Lahtse' से आगे बढ़े और रात को सागा में विश्राम किया। दिनांक ०५/०६/२००६ को सुबह सागा से रवाना हुए। कच्चा धूल भरा पहाड़ी रास्ता था। ड्राइवर सभी अनुभवी और होशियार थे। रास्ते में एक गाँव में रुके जहाँ कुछ मकानों के बाहर स्वास्तिक और चाँद बना हुआ देखा। पूछने पर पता चला कि यह प्रतीक प्राचीन समय से चले आ रहे है। पर्यांग से थोड़ी दूर आगे जाने पर रात को विश्राम के लिये टेन्ट की व्यवस्था की गई। टेन्ट में रहने का यह हमारा प्रथम अनुभव था। बाहर ठण्डी हवा बहुत जोरों की थी। कच्चा धूल भरा रास्ता टेन्ट में रहना इत्यादि आगे आगे वाली कठिनाईयों का सामना करने की

हिम्मत दे रहा था। दिनांक ०६/०६/२००६ को पर्यांग से ९ बजे हमलोग रवाना हुए और २ बजे के करीब मानसरोवर के नजदीक पहुँचे। जहाँ से सर्व प्रथम कैलाश के साक्षात् दर्शन हुए। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हम एक अद्‌भुत नजारा देख रहे हो। अब तक जिसको हमने सिर्फ किताबों और चित्रों में देखा था आज उसी का प्रत्यक्ष दर्शन कर रहे है। सामने कैलाश और उसके आस-पास का दृश्य देखकर किसी विशाल तीर्थभूमि में आ पहुँचे है ऐसा महसूस हो रहा था। दूर से थोड़ी-थोड़ी दूर पर बर्फ से ढकी स्तूप के आकार की छोटी-छोटी टोक और उनके बीच में कैलाश अखंड और अचल खड़ा प्रतीत हो रहा था। दारचेन जिसे हम कैलाश तीर्थ की तलहटी भी कह सकते है वहाँ पहुँचते-पहुँचते चार बज गए। संयोग से हमें होटल में कमरे आदि-मिल गये यद्यपि पानी की कमी और सफाई का उचित प्रबन्ध न होने के कारण सभी को परेशानी का सामना करना पड़ा परन्तु अष्टापद के दर्शन के उत्साह के आगे यह सब कुछ भी नहीं था। दिनांक ०७/०६/२००६ को न्यारी गुम्फा में हमारा एक दल गया। वहाँ पर लगभग २००० वर्ष प्राचीन मूर्तियां देखी जो जिन मूर्ति के सदृश्य थी। जिसके विषय में वहाँ के लामा का कहना था कि ये लेह से आयी है। दिनांक ०८/०६/२००६ हमलोग कैलाश परिक्रमा के लिये लगभग १० बजे रवाना हुए। मोक्ष द्वार तक गाड़ियां जाती है वहाँ से घोड़ों द्वारा या पैदल परिक्रमा का आरम्भ होता है। टेन्ट व अन्य सभी सामग्री यॉक पर ले जायी जाती है। हमलोग गाड़ी से मोक्षद्वार पर पहुँचे। नियत स्थान पर घोड़ें वाले हाजिर थे। ट्रक का सब सामान यॉक पर लाद दिया गया और सभी अपने-अपने घोड़े और कुली के साथ आगे की यात्रा के लिए तैयार हो गये। बचपन में घोड़े पर कई बार बैठी थी लेकिन आज अनेक वर्षों के अन्तराल पर घोड़े पर बैठना अजीब सा लग रहा था। घोड़े

पर चढ़ना भी मुश्किल हो रहा था लेकिन यात्रा के उत्साह ने सभी मुश्किलों को आसान कर दिया। इस तरह ऋषभदेव भगवान् की निर्वाण स्थली की परिक्रमा का आरम्भ उनकी जय के उद्घोष के साथ प्रारम्भ हुआ। हमारी टीम के तीन सदस्यों ने पैदल परिक्रमा की। जिसमें भरत भाई शाह, किरीट भाई गोसालिया और श्री विमल भाई बोर्डिया थे। इस परिक्रमा का बहुत महत्व माना जाता है। यह कहा जाता है कि कैलाश की तेरह परिक्रमा से सारे पाप धुल जाते है। ये परिक्रमा दक्षिण से पश्चिम की ओर से प्रारम्भ होती है जबकि बोनपो धर्म के लोग यह परिक्रमा दक्षिण से पूर्व की ओर से प्रारम्भ करते है। परिक्रमा में जहाँ कहीं भी रास्ता विकट होता वहाँ घोड़ा छोड़कर पैदल ही चलना पड़ता था। बाई ओर बड़े-बड़े पहाड़ थे और नीचे कल-कल करती बहती नदी और दायीं ओर कैलाश से संलग्न पहाड़िया। बीच-बीच में अनेक जगह से कैलास के स्पष्ट दर्शन हो रहे थे। जैसे बादलों के घूँघट से अचानक चन्द्रमा के दर्शन होते है उसी प्रकार पहाड़ियों के मध्य में से कैलास के दर्शन हो रहे थे। सौभाग्यवश परिक्रमा के तीनों दिन मौसम बिलकुल साफ मिला। एक अजीब आनन्द की अनुभूति हो रही थी। बाई ओर के बड़े-बड़े पहाड़ एक विचित्र दृश्य दिखा रहे थे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कैलाश की वन्दना कर रहे हो। पल-पल प्रतीत हो रहा था कि जैसे किसी बहुत ही पवित्र भूमि पर हम चल रहे है। मालुम नहीं यह श्रद्धा, भक्ति और विश्वास था पर अजीब सा सम्मोहन मुझे चलते रहने को प्रोत्साहित करता जा रहा था। शांम ७ बजे हम डेराफुक गुम्फा में पहुँचे जिसके निकट ही हमारे टेन्ट लगे हुए थे यह कैलाश के एकदम पीछे की ओर पड़ता है। ढलते सूर्य और उगते सूर्य की किरणों में कैलाश के सौन्दर्य के यहीं से सबसे स्पष्ट दर्शन होते है। रात्रि भोजन के बाद सबने विश्राम किया और अगले दिन सुबह

दिनांक ०९/०६/२००६ को जल्दी तैयार होकर आगे की यात्रा पर निकल पड़े। हमें पहले ही यह बताया जा चुका था कि आज की परिक्रमा बहुत ही दुर्गम और कठिन है। यात्रा के प्रारम्भ में ही काफी दूर चलने के बाद ही घोड़े पर बैठ पाये। कुछ दूर जाने पर जब डोलमा पास की सीधी चढ़ाई शुरू हुई तो घोड़े से उतर जाना पड़ा और १९,५०० फुट पर पैदल ही चढ़ाई करके हमलोग डोलमा पास पर पहुँचे। वहाँ पर पता चला कि जीतेन्द्र भाई शाह कुछ अस्वस्थ है। वहाँ बहुत ठंड़ थी और ज्यादा देर रुक्रना भी खतरनाक था अतः सब आगे बढ़े। नीचे कठिनतम रास्ता और उतराई थी। कई बार ऐसा लग रहा था कि कैसे यह रास्ता पार किया जायगा परन्तु आदिनाथ भगवान् का स्मरण करते हुए इस दुर्गम रास्ते को जिसमें बर्फ के ग्लेशियर में चलना, बड़े-बड़े पत्थरों पर एवं पानी को पार करना तथा खड़ी उतराई पर उतरना को हमने पार किया। नीचे उतरने पर पता चला कि जीतू भाई की हालत नाजुक है। दो अंग्रेज यात्रियों के द्वारा ऑक्सीजन और दवा उनको दी गई तब उनकी हालत में सुधार हुआ और आगे की यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हुई। उतराई के बाद करीब पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर जुथुलफुक गुम्फा के पास हमारे टेन्ट लगे थे। गुम्फा से दो तीन किलोमीटर पहले हमारे घोड़ेवाले ने हमें इशारे में ऊपर देखकर नमस्कार करने को कहा। मैंने जब ऊपर देखा तो बड़े-बड़े पत्थरों के खंडहर थे। देखने में ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानों कोई बहुत प्राचीन अवशेष विखरे पड़े हो। करीब ७ बजे हम लोग अपने कैम्प में पहुँचे। पूछने पर मालूम पड़ा कि जीतू भाई की तबियत अब स्थिर है। श्री विमल बोरडिया सबसे बाद में लगभग ९.४५ बजे कैम्प में पहुँचे। रात को विश्राम के बाद सुबह सभी लोग तैयार होकर आगे चलने के लिये निकल पड़े एवं १२.३० बजे 'Dongma Point' पर पहुँचे। जहाँ १.३० बजे के लगभग हमारी गाड़ियां आ गई। जिसमें बैठकर हमलोग २.३० बजे तक होटल में पहुँच गये।

दिनांक ११/०६/२००६ को पूर्णिमा के दिन हमलोग मोक्षद्वारा के पास न्यारी गुम्फा में गये जहाँ उस दिन वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा था। दोपहर भोजन के बाद हमलोग मानसरोवर की ओर रवाना हुए और च्यु गुम्फा के नजदीक में रुके। किरीट भाई और अभय भाई ने वहाँ पूजा करवायी। रात को पूर्ण चाँदनी में बाहर निकलकर वहाँ का अद्‌भुत नजारा देखा। एक तरफ कैलाश तो दूसरी तरफ गुरल मन्धाता पर्वत और बीच में मानसरोवर और बर्फीली हवा। ऐसे में भजन और गीतों का सिलसिला शुरू हुआ जो देर तक चला।

दिनांक १२/०६/२००६ को सुबह १० बजे मानसरोवर की परिक्रमा के लिये रवाना हुए। परिक्रमा करते हुए वहाँ स्थित गुम्फाओं में हमारी टीम गई। प्राचीन काल में इन गुफाओं में सन्यासी साधना करते थे। आज यहाँ बौद्ध लामा लोग रहते है। परिक्रमा में एक स्थान पर जहाँ दलदल नहीं था रुक कर सबने मानसरोवर के पवित्र चल का स्पर्श किया। किरीट भाई और विमल भाई ने वहाँ स्नान किया। तत्पश्चात् दोपहर का भोजन लेकर वहाँ से आगे चले और परिक्रमा पूरी कर शाम को दारचेन पहुँचे।

दिनांक १३/०६/२००६ को भरत भाई और किरीट भाई 'सेरालुंग' गुम्फा की तरफ गये और वहाँ अपना कैम्प लगाया जो नंदी पर्वत के काफी करीब था जिससे कि वह नंदी पर्वत पर प्राचीन मंदिरों के अवशेष खोजने का प्रयास कर सके जिनका हमें साहित्य में उल्लेख मिलता है। इधर हमलोग 'गेंगटेक गुम्फा' में गये और वहाँ पर विगत ८ वर्षों से रह रहे स्विस दम्पत्ति से मुलाकात की। उनके नवनिर्मित विहार को देखा। उनसे कुछ जानकारी भी प्राप्त हुई। उनके अनुसार ८००वर्ष पहले यहां जैन साधु साधना करने आते थे। हमने अपने शोध कार्यों की उन्हें जानकारी दी। इस विषय पर उन्होंने अपने पूर्ण

सहयोग का आश्वासन दिया। 'गेंगटेक गुम्फा' से 'सेरालुंग गुम्फा' जाने का पहाड़ियों में एक पैदल छोटा रास्ता है यह जानकर हमलोग उस रास्ते पर रवाना हुए। ठक्कर भाई और अभय भाई सामने के पहाड़ पर जहाँ स्विस दम्पत्ति प्राचीन गुफा होने की बात कही थी उसकी खोज में गये। हमलोग करीब २ घंटे चलने के बाद अचानक एक ऐसे पहाड़ी रास्ते पर पहुँचे जो बहुत ही संकरा और सिर्फ मिट्टी का था। अतएव पथ की दुर्गमता के कारण हमें वहां से वापिस लौटना पड़ा और उसी राह से वापिस चलकर 'गेंगटेक गुम्फा' में पहुँचे। करीब ५ बजे अभय भाई और ठक्कर भाई भी ऊपर से नीचे आ गये और सभी 'दारचिन' की तरफ रवाना हो गये।

दिनांक १४/०६/२००६ को हमारी टीम 'सेरालुंग गुम्फा' की ओर गाड़ी से गयी। मौसम पलटना आरम्भ हो गया था और बादल घिर आये थे और बर्फ पड़नी शुरू हो गयी थी । वहाँ से हमने कैलाश और नन्दी पर्वत को बहुत नजदीक से देखा। भरत भाई का यह मानना था कि नन्दी पर्वत में ही सिंह निषधा प्रसाद है। वहाँ से हमलोग वापिस होटल आये। शाम तक मौसम और भी खराब हो गया। भरत भाई और किरीट भाई को भी अपनी खोज का कार्यक्रम अधूरा छोड़कर वहाँ से वापिस लौटना पड़ा।

दिनांक १५/०६/२००६ को हमारी टीम के सदस्य एक डॉक्टर से मिले जो 'बोनपो धर्म' के विशेषज्ञ थे उनसे अष्टापद तथा जैनधर्म विषयक जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की। उन्होंने हमें बताया कि प्राचीन समय में कैलाश के चारों दिशाओं में रत्नों की प्रतिमाएं थी जो कालान्तर में नष्ट हो गई। वहाँ के बड़े लामा से भी हमलोग मिले और काफी देर उनके इसी विषय में चर्चा की। ल्हासा से लेकर अबतक जिन-जिन विहारों में हमलोग गये और बौद्ध

लामाओं से सौहार्द्ध पूर्ण बात-चीत हुई परन्तु जैन धर्म सम्बन्धित विशेष जानकारी नहीं मिली या तो वे लोग कुछ अनभिज्ञ थे या बताना ही नहीं चाहते थे। उल्लेखनीय है कि ७वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बौद्ध साधुओं ने भारत से तिब्बत में आकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया था तथा बौद्ध ग्रन्थों का तिब्बती (भोट) भाषा में अनुवाद किया था। अतः मूल ग्रन्थ भारत के प्रसिद्ध बौद्ध मठों जैसे धर्मशाला, सारनाथ आदि में आज भी मौजूद है जहाँ पर हमारी टीम का शोध कार्य पहले से ही चल रहा है तथा कुछ ग्रन्थों के अनुवाद से हमें इस क्षेत्र में ऋषभदेव, चक्रवर्ती सम्राट भरत, बाहुबली और २०वें तीर्थंकर मुनि सुब्रत स्वामी का आने के वर्णन के प्रमाण उपलब्ध हुए। यद्यपि इसमें अभी काफी संशोधन की आवश्यकता है।

दिनांक १६/०६/२००६ को हमलोग 'दारचेन' से वापिस रवाना हुए। शाम को ४ बजे पर्यांग पहुँचे। १७/०६/२००६ को पर्यांग से सागा होते हुए रात को १२ बजे लगभग नियालम पहुँचे। रास्ता पूरा कच्चा, कहीं मिट्टी तो कहीं पत्थरों को पार करता हुआ था। ऐसा लग रहा था कि जैसे मरूभूमि में चल रहे हो। एक तरफ नहर बीच में मरूभूमि तथा दाहिनी ओर बर्फ की ऊंची-ऊंची चोटियां और ठंड़ी तेज हवा। अद्‌भुत नजारा था। १८/०६/२००६ को सुबह १० बजे न्यालम से रवाना होकर 'झागमू' पहुँचे। यह रास्ता बिल्कुल अलग था यहाँ चारों तरफ हरियाली और पानी के स्रोते दिख रहे थे। 'झागमू' में कस्टम चेकिंग में करीब दो घंटे लग गये । वहाँ से पैदल ही 'फ्रैंडशिप ब्रिज' पार करके हमलोगों ने नेपाल में प्रवेश किया और बस में सवार होकर काठमाण्डू के होटल अन्नपूर्णा में शाम को पहुँचे।

दिनांक १९/०६/२००६ को हमलोग नगरकोट की ओर रवाना हुए। रास्ते में भक्तपुर के ऐतिहासिक प्राचीन मंदिरों और अवशेषों

को देखा वहाँ भी पशु बलि दी जाती है। यह देखकर मन खिन्न हो उठा। नगरकोट अत्यन्त सुन्दर जगह है जहाँ लोग सूर्य अस्त और सूर्य उदय को देखने जाते है। सूर्य अस्त तो हमलोगों ने देखा परन्तु सूर्य उदय बादलों के कारण नहीं देख पाये। होटल से बाहर का नजारा बहुत ही मोहक था। हल्की गुलाबी ठंड़ और प्राकृतिक सुन्दर दृश्यों का समिश्रण मन को आनन्दित कर रहा था। अगले दिन दिनांक २०/०६/२००६ सुबह ही काठमाण्डू के लिए हमलोग रवाना हो गये।

२१/०६/२००६ को सुबह हमारी टीम के कुछ लोग नेपाल स्थित बोनपो विहार में गये और वहाँ से कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की जिसपर शोध जारी है। शाम को हमलोग सभी अपने-अपने गन्तव्य स्थान की ओर रवाना हो गये।

इस दुर्गम तथा अद्‌भुत यात्रा के प्रारम्भ में अष्टापद और कैलाश के संदर्भ में कुछ प्रश्न मन थे जिनके परिप्रेक्ष्य में उस जगह का अवलोकन करना था। श्रद्धा, विश्वास और भक्ति के साथ-साथ एक शोध दृष्टि की भी आवश्यकता थी। समय की सीमा एवं मौसम इत्यादि दूसरी अनेक कठिनाईयों के चलते यह पूर्णरूप से संभव नहीं हो पाया था। फिर भी कुछ बाते सामने आयी जिनकी चर्चा आवश्यक है।

१) जैन साहित्य और पुराणों के अलावा तिब्बती साहित्य में भी ऋषभदेव का वर्णन हमें मिलता है इसके अतिरिक्त २०वें तीर्थंकर मुनि सुब्रत स्वामी इस क्षेत्र में आये थे इसका भी वर्णन है जो तीर्थंकरों की ऐतिहासिकता को पुष्ट करता है।

२) कुछ विद्वानों के अनुसार अष्टापद आठ पहाड़ियों की श्रृंखला हो सकता है। स्विस दम्पत्ति के अनुसार वहाँ आठ पहाड़ियां

है। जैन साहित्य में कैलाश और अष्टापद को एक ही बताया गया है। दोनों शब्दों का समान अर्थ भी दोनों का एक होना सिद्ध करता है। अभिधान चिन्तामणि में आचार्य हेमचन्द्र सूरि ने कैलाश के चार नाम बताए है जिनमें अष्टापद भी है। पुराणों में भी ऋषभदेव का निर्वाण कैलाश में हुआ ऐसा वर्णन है। उदाहरण के लिये —

दर्शयन् वर्त्म वीराणां सुरासुरनमस्कृतः।
नीतित्रयस्य कर्ता यो युगादौ प्रथमो जिनः।।

सर्वज्ञः सर्वदर्शी च सर्वदेवनमस्कृतः।
छत्रत्रयीभिरापूज्यो मुक्तिमार्गमसौ वदन्।।

आदित्यप्रमुखाः सर्वे बद्धाञ्जलिभिरीशितुः।
ध्यायन्ति भावतो नित्यं यदंघ्रियुगनीरजम्।।

कैलासविमले रभ्ये ऋषभोयं जिनेश्वरः।
चकार स्वावतारं यो सर्वः सर्वगतः शिवः।।

(श्री नागपुराण)

वीर पुरुषों को मार्ग दिखाते हुए सुर असुर जिनको नमस्कार करते हैं जो तीन प्रकार की नीति के बनाने वाले हैं, वह युग के आदि में प्रथम जिन अर्थात् आदिनाथ भगवान् हुए, सर्वज्ञ (सबको जानने वाले), सबको देखने वाले, सर्व देवों के पूजनीय, छत्रत्रय करके पूज्य, मोक्षमार्ग का व्याख्यान कहते हुए, सूर्य को प्रमुख रखकर सब देवता सदा हाथ जोड़कर भाव सहित जिसके चरणकमल का ध्यान करते हुए ऐसे ऋषभ जिनेश्वर निर्मल कैलाश पर्वत पर अवतार धारण करते भये जो सर्वव्यापी हैं और कल्याणरूप हैं।।

अतः कैलाश और अष्टापद को अलग-अलग रूप में नहीं देखना चाहिए।

३) चक्रवर्ती सम्राट भरत द्वारा यहाँ पर मंदिरों के निर्माण के पश्चात् आज हजारों वर्षों के अन्तराल में अनेक भूमिगत परिवर्तन होने से पहाड़ के ऊपर के निर्दर्शनों का कुछ हद तक क्षय होना स्वाभाविक है। एक प्रश्न यह भी उठता है कि २६०० साल पूर्व भगवान् महावीर ने कहा था कि जो व्यक्ति अपनी आत्मलब्धि से अष्टापद के मंदिरों का दर्शन करेगा वह इसी जन्म में मोक्ष को प्राप्त होगा। प्रथम गणधर गौतम स्वामी ने अष्टापद का दर्शन किया था। इन २६०० सालों में कोई बड़ा भौगोलिक परिवर्तन नहीं हुआ तब मंदिरों के अवशेष क्यों नहीं स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है। इसके समाधान में हम कह सकते है कि सम्राट अशोक के महल के अवशेष हमें ६० फुट नीचे खुदाई करने पर हमें मिल रहे है जो २३०० साल पूर्व के है तो यह हजारों वर्षों पहले के मंदिरों का छोटे-छोटे पत्थरों के नीचे समा जाना असम्भव नहीं हैं। चाप और ताप के निरन्तर परिवर्तन से पत्थरों में निरन्तर खंडित होने की प्रवृत्ति रहती है। जिसके कारण वहाँ के पत्थरों का छोटे-छोटे टुकड़ों में बदल जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं। वहाँ पड़े असंख्य पत्थरों के टुकड़ों को देखने से इसी भावना की पुष्टि होती है।

४) कैलाश की रचना एक प्राकृतिक पहाड़ की रचना नहीं है अपितु यह कसौटी पत्थर का स्मारक प्रतीत होता है जो हमेशा बर्फ से ढका हुआ है और आस-पास के पहाड़ों से बिलकुल भिन्न।

५) कैलाश परिक्रमा का प्रारम्भ मोक्ष द्वार से होता है जहाँ एक विशाल प्लेटफार्म की तरह बना दिखता है वहीं पर वार्षिक मेले का आयोजन होता है जो बहुत ही प्राचीन परम्परा का प्रतीक है।

६) वहाँ से आगे बढ़ने पर पर्वतों के उपर बड़े-बड़े नन्दी का स्वरूप दिखाई देता है। जो इसको राजतरंगिनी में वर्णित नन्दी क्षेत्र

अभिहित करता है। यहाँ पर चढ़कर खोज करना हमलोगों के सामर्थ्य के बाहर है। कैलाश के पूर्व तरफ कुछ खण्डर भी दिखाई पड़े परन्तु हमारी खोज अधूरी रही।

७) हमारे साथ सेटेलाइट वैज्ञानिक डॉ. प्रभु भाई ठक्कर ने कैलाश मानसरोवर के रास्ते में प्राचीन नगर के होने के सम्भावना व्यक्त की है। भविष्य में यह एक महत्वपूर्ण खोज सिद्ध हो सकती है।

८) कैलाश तिब्बत के क्षेत्र में अवस्थित है। बौद्ध धर्म से पहले यहाँ बोनपो धर्म प्रचलित था उसके पूर्व लगभग १४वीं शताब्दी ई. पूर्व में वहाँ पर जैन धर्म का प्रभाव था ऐसा साहित्यिक प्रमाण मिलता है। जो सिर्फ जैन धर्म की प्राचीनता की पुष्टि ही नहीं करता बल्कि बोनपो धर्म पर उसका प्रत्यक्ष प्रभाव परिलक्षित होता है।

अतः जहाँ साहित्यिक रूप से में हमें ऋषभदेव के निर्वाण स्थल के रूप में अनेक पुख्ता प्रमाण मिले है लेकिन इतने बड़े क्षेत्र में पुरातात्विक खोज करने के काम भी विशाल स्तर पर किया जाना चाहिए। यह क्षेत्र चीन के आधीन है अतः यह कार्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ही किया जा सकता है जिसके लिये हमें हर सम्भव प्रयास करना चाहिए।

योगशतक

प्रस्तावना– डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी

दार्शनिक क्षेत्र में आ. हरिभद्र की, शब्ददेह की अपेक्षा से छोटी होने पर भी आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त महत्व की, देन है षड्दर्शनसमुच्चय। आ. हरिभद्र के पूर्व एवं पश्चात्कालीन विशिष्ट जैन-जैनेतर आचार्यों ने अपने-अपने ग्रन्थों में प्रायः सभी भारतीय दर्शनों की पर्यालोचना की है, परन्तु उस पर्यालोचना की भूमिका स्वत के समर्थन तथा परमत के निराकरण पर्यन्त ही मर्यादित रही है। सब दर्शनों का प्रतिपादनात्मक और समभावपूर्ण निरुपण किसी ने नहीं किया। अलबत्ता, आ. हरिभद्र से पहले सिद्धसेन दिवाकर ने इस दिशा में प्रारम्भ किया था,[१] पर इन्होंने उस प्रारम्भ को योग्य दिशा में विकसित किया है। इन्होंने षड्दर्शन समुच्चय में किसी भी एक मत का स्थापन और दूसरे का उत्थापन करने की दृष्टि न रखकर छहों दर्शनों के मान्य मूल-मल तत्त्वों का प्रामाणिक निरूपण किया है। इतना ही नहीं, समग्र दार्शनिक जगत् में तिरस्कृत समझे जानेवाले चार्वाक मत की भी उन्होंने एक दर्शन के तौर पर गणना की है। इस तरह षड्दर्शन समुच्चय आ. हरिभद्र की अनोखी सूझका एक ज्वलन्त उदाहरण है। यह भारतीय दर्शनशास्त्र के इतिहास में भी एक विशिष्ट रचना के तौर पर अपना एक सुनिश्चित स्थान रखता है।

आचारसंशोधक —

तत्त्वचिन्तन की भाँति ही आचार के विषय में भी आ. हरिभद्र ने भिन्न-भिन्न दृष्टि से नवीन एवं विशिष्ट साहित्य-सर्जन किया है। उनके ऐसे सर्जन को हम तीन भाग में बाँट सकते हैं।

---

१. देखो सिद्धसेन दिवाकर की द्वात्रिंशिका क्रमांक ९, १२, १४, १५ आदि तथा गुजराती सन्मतितर्क पृ. १८७।

पहले प्रकार के साहित्य में निर्ग्रन्थ-परम्परा में परापूर्व से प्रचलित गृहस्थ एवं यतिधर्म का संक्षेप अथवा विस्तार से, वाचक उमास्वाति के तत्त्वार्थ, प्रशमरति आदि ग्रन्थों की भाँति, निरूपण किया गया है। ऐसे साहित्य के निर्माण के पीछे आ. हरिभद्र की कुछ ऐसी दृष्टि प्रतीत होती है कि जो व्यक्ति आगमकालीन एवं उत्तरकालीन जैन परम्परा के निवृत्तिलक्षी आचारों का अध्ययन अथवा परिशीलन करना चाहें उनके लिए छोटे बड़े प्रकरणों द्वारा सामग्री प्रस्तुत करना। इस प्रकार के साहित्य में विंशिकाएँ, पंचवस्तु, पंचाशक, श्रावकप्रज्ञप्ति जैसे ग्रन्थ आते हैं।

आ. हरिभद्र ने आचार विषयक दूसरे जिस साहित्य प्रकार का सर्जन किया है वह ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्त्व का है। उनके पहले ही निर्ग्रन्थ-परम्परा के निवृत्तिलक्षी आचार में शिथिलता एवं अनेकविध विकृतियाँ दाखिल हो गई थीं।[१] उनके समय में तो वे और भी अधिक तीव्र बन गई थीं।[२] इन सब विकृतियों का उन्होंने सम्बोध प्रकरण[३] जैसे ग्रन्थों में विस्तृत वर्णन किया है। उससे तत्कालीन निर्ग्रन्थ संघकी स्थिति का स्पष्ट आभास मिलता है।

वह कहते हैं कि—जैन साधु चैत्य एवं मठों में रहते हैं, अपने लिए देव द्रव्य का उपयोग करते हैं, विविध रंगों के सुगन्धित वस्त्र पहनते हैं, आहार के लिए खुशामद करते हैं, पैसे के लिए अंग उपांग आदि सूत्र श्रावकों के समक्ष पढ़ते हैं, गुणशील व्यक्तियों की ओर द्वेषभाव रखते हैं, पैसे देकर छोटे छोटे बालकों को चेला बनाने के लिए ख़रीद लेते हैं, मुग्धजनों को ठगते हैं, टोटका करते हैं, सूदपर पैसे उधार देते हैं, अपने लिए वस्त्र, पात्र एवं द्रव्य अपने गृहस्थों के घर पर जमा कराते हैं, चेलों के लिए आपस में लड़ मरते हैं। अन्त में वह कहते हैं कि— ये साधु नहीं हैं, पर पेट भरों की जमात हैं। जो ऐसा कहते हैं कि तीर्थंकर वेश धारण करने से ये साधु वन्दनीय हैं, वे

१. उत्तराध्ययन अ. १७ तथा सूत्रकृतांग १.७।

२. देखो सम्बोधप्रकरण पृ. १३-८

३. पं. श्री कल्याणविजयजी के मतानुसार सम्बोधप्रकरण बादका (१४वीं शदी का) ग्रन्थ है। देखो—श्रीमद्राजेन्द्रसूरि स्मारक ग्रन्थ पृ. ७६४।

धिक्कार के योग्य हैं। शिरोवेदना की इस बात की पुकार हम किसके आगे जाकर करें[१] ?

आ. हरिभद्र ने जिस कटु सत्य का आलेखन किया है उससे शुद्ध धर्म के बारे में उनकी समझ एवं रुचि कैसी थी इसका स्पष्ट पता चलता है। परन्तु वह केवल विकृतियों का वर्णन करके ही चुप नहीं बैठे रहे ; उन्होंने उन विकृतियों को दूर करने के विधायक उपाय भी सूचित किये हैं। देवद्रव्य आदि का किस प्रकार उपयोग करना चाहिये इसका निर्देश करते हुए वह कहते हैं कि—जिनप्रवचन की वृद्धि करनेवाला तथा ज्ञान एवं दर्शनगुण की प्रभावना करने वाला मंगलद्रव्य शाश्वतद्रव्य और निधिद्रव्य है[२]। इसी प्रकार श्रावकों को आगम की सूक्ष्म बातों का अनाधिकारी ठहराना तथा सूत्र पढ़कर उनके पास से पैसे लेना तो सर्वथा अनुचित ही है।[३] इसके अतिरिक्त अपने पंचवस्तु, षोडशक, अष्टक आदि ग्रन्थों में उन्होंने जिनपूजा, जिनबिम्बप्रतिष्ठा, जिनगृह, जैन साधु की भिक्षा आदि अनेक विषयों पर अपने स्पष्ट मन्तव्य जाहिर किये हैं।

उनका आचारविषयक साहित्य का तीसरा प्रकार एक तरह से उपर्युक्त दोनों प्रकारों से अपनी मौलिकता के कारण जुदा पड़ता है। आ. हरिभद्र के पहले आगमकाल से ही निर्ग्रन्थ परम्परा को उसमें प्रविष्ट विकृतियों से बचाने तथा नई विकृतियों से सावधान रखने के लिए श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दोनों परम्पराओं में भिन्न भिन्न दृष्टिबिन्दुओं से अनेक ग्रन्थों की रचना तो होती ही रही है[४], परन्तु हम जानते हैं वहाँ तक वैसे सब ग्रन्थ प्रायः साधुसंघ को उद्धिष्ट करके ही लिखे गये हैं।

आ. हरिभद्र से पहले गृहस्थ वर्ग को लक्षित करके प्रवृत्तिधर्म का विधान स्वतंत्ररूप से यदि किसी जैनाचार्य ने किया हो तो उसका प्रमाण अबतक

---

१. संबोधप्रकरण पृ. । ३ - ८

२. सम्बोधप्रकरण पृ. । ४ गा. १६

३. सम्बोध प्रकरण पृ. । १३ गा. २६-७

४. सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन आदि

उपलब्ध नहीं है इस बारे में उन्होंने ही सर्वप्रथम प्रारम्भ किया है। श्रावकधर्म अंगीकार करनेवाला गृहस्थ किस-किसका त्याग करे, उस परिमित त्यागको शुद्ध रखने एवं उसे पुष्ट करने के लिए कैसे कैसे अतिचारों से वह बचे तथा जीवन टिकाने के लिए कैसी-कैसी मर्यादाएँ बाँधे–इनका तो पहले से ही अणुव्रत, शीलव्रत आदिद्वारा निरूपण होता आ रहा था; परन्तु आ. हरिभद्र ने देखा कि साधुधर्म की निवृत्ति एवं प्रवृत्ति दोनों के विधान तो जैन आचार ग्रन्थों में हैं, जबकि गृहस्थवर्ग के लिए केवल निवृत्तिलक्षी वर्णन तो मिलता है, पर सीधा प्रवृत्तिलक्षी विधान करनेवाला कोई ग्रन्थ नहीं है।

आ. हरिभद्र मूल तो ब्राह्मण और उसमें भी वेद, स्मृति, पुराण, दर्शन आदि के निष्णात पण्डित। इससे वैदिक परम्परा के धर्मसूत्र एवं स्मृतिग्रन्थों में आनेवाले प्रवृत्ति और निवृत्ति के विधान तो उनके समक्ष थे ही। इनके अतिरिक्त निर्ग्रन्थ-साहित्य में उपलब्ध गृहस्थ धर्म के विधान भी उनके देखने में आये। दोनों की तुलना करने पर उन्हें प्रतीति हुई होगी कि गृहस्थवर्ग समस्त समाज का मध्यबिन्दु है। सभी आश्रमों की व्यवस्था और संगठन अन्ततोगत्वा उसी के आसपास होते हैं और उसी को केन्द्र में रखने पर ही उन सबका विकास शक्य भी है। ऐसे गृहस्थवर्ग के जीवनधर्म के लिए सिर्फ यह न करना, वह न करना आदि जैसे विधान पर्याप्त नहीं है। यदि निवृत्तिपरायण साधुसंघ के लिए उसके योग्य प्रवृत्ति सूचक विधान आवश्यक हैं, तो गृहस्थवर्ग के लिए तो ऐसे स्पष्ट एवं व्यवस्थित विधानों की और भी अधिक आवश्यकता है। ऐसे किसी विचार से ही मानो उन्होंने धर्मबिन्दुप्रकरण की रचना की है। धर्मबिन्दु में आचार्य हरिभद्र ने कहा है कि एक सच्चे गृहस्थ के लिए आवश्यक सम्यग्दृष्टि और अणुव्रत कोई धारण करना चाहे तो भी उसके पहले पूर्वकालीन तैयारी की दृष्टि से बहुत कुछ करना पड़ता है। फलतः पूर्वकालीन तैयारी के उद्देश्य से उन्होंने गृहस्थों के विधान किये हैं। ऐसे विधान वैदिक धर्मसूत्र एवं स्मृति ग्रन्थों में तो है ही, पर आ. हरिभद्र को तो वे विधान जैन समाज को लक्ष्य में रखकर करने थे। इसी से उन्होंने वैसे प्रवर्तक विधान असन्दिग्ध भाषा में किये। ये विधान यद्यपि स्मृतिग्रन्थ किसी भी वर्ण या वर्ग के गृहस्थ को व्यवहारिक जीवन में

कैसे बरतना चाहिए इसका सुझाव तो पेश करते ही हैं। आ. हरिभद्र के ये प्रवर्तक विधान जितने विस्तृत नहीं है फिर भी जितने है वे मार्गानुसारी गुण कहलाते हैं। संख्या में यद्यपि पैंतीस ही हैं, पर गृहस्थ जीवन के सभी पहलुओं को छूते हैं और इसीलिए बहुत महत्त्व के हैं। उनका यह सर्जन जैन परम्परा के लिए जितना मौलिक है उतना ही उसकी पूर्वकालीन एकदेशीय ताका पूरक होने से विशिष्ट भी है।

विशेष जिज्ञासु इन पैंतीस मार्गानुसारी गुण अथवा प्रवृत्तिविधानों को उनके धर्मबिन्दु ग्रन्थ में से जान सकते हैं। यहाँ पर उन विधानों का प्रवर्तक स्वरूप कैसा है इसका दिशासुचनमात्र करने के उद्देश्य से कुछ विधानों का हम निरूपण करेंगे।

१) अर्थोपार्जन के लिए गृहस्थ कौन-सा रोजगार करे और किस दृष्टि से करे इसका निर्देश करते हुए वह कहते हैं कि जिस व्यक्ति को जो कर्म-प्रवृत्ति परम्परा से प्राप्त होती है उसे वह करे। इसमें शर्त हो तो वह सिर्फ इतनी ही है कि — (क) वह निन्द्य न हो, (ख) उसमें शक्तिका अतिक्रम न होता हो, और (ग) वह न्यायपूर्वक हो। इसमें खास भार तो प्रामाणिकता के ऊपर दिया गया है।

२) विवाह के बारे में विधान करते हुए वह कहते हैं कि जिनके कुल, शील तथा आहार-व्यवहार आदि समान हों और जो एक ही गोत्र के न हों वे आपस में विवाहसम्बन्ध कर सकते हैं। यहाँ पर उनका खास भार शील, स्वभाव एवं व्यवहार आदि की समानता पर है।

३) गृहस्थ किस प्रकार अपना जीवनयापन करे इस बारे में विधान करते हुए वह कहते हैं कि अपनी सम्पत्ति के अनुसार ही वेश और आयके अनुसार ही व्यय करना चाहिए।

४) गुरुजनों के प्रति गृहस्थ का व्यवहार कैसा होना चाहिए इसका विधान करते हुए वह कहते हैं कि माता-पिता जैसे गुरुजनों की उपासना तथा जो चारित्र एवं ज्ञान में श्रेष्ठ हो उसकी सेवा करनी चाहिए। इसी प्रकार देव एवं अतिथि के साथ ही दीन अथवा दुर्बल जनकी प्रतिपत्ति अर्थात् आदर करने का भी उन्होंने

विधान किया है। इसमें अधिक ध्यान आकर्षित करे ऐसा विधान तो अपने आश्रित जनकी सँभाल लेने का है। वह कहते हैं कि आश्रित वर्ग का पोषण करना ही बस नहीं हैं; पर उसे उसके योग्य कार्य में संलग्न भी करना चाहिए। आश्रितवर्ग क्या क्या चाहता है इस ओर भी वह दृष्टि रखे और उसे संकट में से बचाने का भी प्रयत्न करे। इसी प्रकार ऐसे पोष्यवर्ग का व्यवहार निन्दा योग्य हो रहा हो तो उसका भी ध्यान रखे और अपने गौरव की रक्षा करे।

आ. हरिभद्र के पूर्वकालीन पउमचरिय,[१] वसुदेवहिण्डी,[२] आवश्यकनिर्युक्ति[३] और उस परके भाष्य आदि ग्रन्थों में तथा उनके कुछ उत्तरकालीन जिनसेन प्रणीत आदिपुराण[४] जैसे ग्रन्थ में ऋषभदेव के हाथों क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र इन तीन वर्णों की स्थापना और उनके योग्य प्रवृत्तियों का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त भरतद्वारा ब्राह्मणवर्ण की स्थापना और तदनुरूप कर्तव्यों का वर्णन भी मिलता है।[५] इतना ही नहीं, आ. जिनसेन ने तो वर्णविभाग के अतिरिक्त आगमानुसारी संस्कारों का भी वर्णन किया है। स्वयं आ. हरिभद्र ने भी आवश्यक निर्युक्ति तथा भाष्य की व्याख्या करते समय उस निर्युक्ति एवं भाष्य में आये हुए वर्णधर्म और आश्रम संस्कार का वर्णन किया है परन्तु यह सारा वर्णन सामान्य चार वर्ण एवं चार आश्रमविषयक वैदिक स्मृति ग्रन्थों के अनुकरण के रूप में हुआ है। इसी स्मृतिग्रन्थों में ब्रह्मा द्वारा जिन चार वर्णों का विभाग और उनके कर्तव्यों की स्थापना का वर्णन आता है, उन्हीं वर्ण और उनके कर्तव्यों की स्थापना भगवान् ऋषभदेव और उनके पुत्र भरतने की थी, ऐसा जैन ग्रन्थों में उल्लेख आता है। स्मृति ग्रन्थों में जो स्थान ब्रह्मा का है वहीं स्थान जैन ग्रन्थों में ऋषभदेव और भरत लेते हैं। इसके अतिरिक्त जैन आचार्य ऐसा भी कहते हैं कि उनके अपने अलग वेद थे और वे मूल जैन वेद बाद में

---

१. उद्देश्य ४, गा. ६४ से आगे।

२. पृ. १८३ से। (आत्मानन्द जैन सभा, भावनगर द्वारा प्रकाशित)

३. गा. ३६१ से आगे, पृ. १५६। (आगमोदय समिति प्रकाशन)

४. आदिपुराण भा. १, पर्व १६, श्लो. १४२ से भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन)

५. आदिपुराण भा. २, पर्व ३५ तथा ३९ से ४२।

अनार्य हो गये। आ. जिनसेन तो स्मार्त वर्ण एवं आश्रमव्यवस्था का जैनीकरण करते समय ऋषभदेव के हाथों स्पृश्य और अस्पृश्य ऐसे दो शूद्र वर्ण भी स्थापित करवाते हैं[१] और प्रसिद्ध वेदों को अक्षरम्लेच्छ[२] कहते हैं। परन्तु आ. हरिभद्र जब आध्यात्मिक धर्म को लक्ष में रखकर स्वतन्त्र प्रकरणों की रचना करते हैं तब वह सामाजिक दृष्टिवाले वर्णविभागानुसारी पौराणिक वर्णन की पुरानी राह छोड़कर नया ही रास्ता अपनाते हैं। वह मनुस्मृति आदि स्मार्त ग्रन्थों में विहित कई प्रवर्तक विधान आध्यात्मिक धर्म की भूमिका के लिए अनिवार्यरूप से आवश्यक समझकर अपनाते हैं और परम्परालब्ध एकांगी निवर्त्तक विधानों में प्रवर्तक विधानों की, मार्गानुसारी गुण के रूप में, पूर्ति करते हैं।

योगाभ्यासी :–

योग यद्यपि ऊर्ध्वगामी आचार का एक प्रकार ही है फिर भी योगविषयक हरिभद्रीय साहित्य का उनके उपर्युक्त आचारविषयक साहित्य में समावेश न करके उसका यहाँ जो अलग परिचय कराया जाता है वह इसलिये कि आ. हरिभद्र के सभी सर्जनों में मूर्धन्यस्थान लेने की योग्यता उनके योग विषयक ग्रन्थों में है। वे ग्रन्थ जिस तरह जैन परम्परा से सम्बन्ध रखते हैं उसी तरह समस्त भारतीय योग परम्परा को भी अपने में समा लेते हैं। जिस ग्रन्थ की प्रस्तावना रूप से यह सब कुछ लिखा जा रहा है वह ग्रन्थ स्वयं भी योग विषयक ही है। आ. हरिभद्र के योग-साहित्य का यथावत् मूल्यांकन करने के लिए यह आवश्यक है कि पहले की आध्यात्मिक साधना, उसकी परम्पराएँ तथा उससे सम्बन्ध रखने वाले साहित्य का हम संक्षिप्त किन्तु स्पष्ट परिचय प्राप्त कर लें।

आध्यात्मिक साधना और उसकी परम्पराएँ :—

अन्तर्मुख होकर अपने आपकी ही मुख्यरूप से परीक्षा करना और ऐसा करते समय जो क्लेशमल और उसके कारण ध्यान में आवें उनके निवारण की वृत्ति का नाम ही आध्यात्मिकता है। ऐसी आध्यात्मिकता सिद्ध करने के मार्ग और

---

१. आदिपुराण भा. १, पर्व १६, श्लो. १८५-६।

२. आदिपुराण भा. २, पर्व ४२, श्लो १७८ से आगे।

प्रयत्न अनेकविध हैं। उन सबका समावेश आध्यात्मिक साधना में होता है। लक्ष्य एवं साध्य एक होनेपर भी उसे सिद्ध करने की प्रक्रियाएँ बहुत बार काफी भिन्न होती हैं और भिन्न सी दिखाई भी देती हैं। इसका कारण यह है कि कोई प्रक्रिया एक अंगपर तो दूसरी प्रक्रिया दूसरे अंगपर होने से अन्ततोगत्वा साधना की परम्पराएँ ही बनी रहती हैं। ऐसी परम्पराएँ आज भी अनेक हैं।

आध्यात्मिक साधना की ऊँची-नीची तथा सूक्ष्म-स्थूल सभी कक्षाओं तथा उन कक्षाओं के सभी अंगों के सूचक दो शब्द प्राचीनकाल से भारतीय संस्कृति में बहुत ही प्रसिद्ध हैं। वे हैं तप और योग। इन दोनों में भी तप शब्द अधिक से अधिक प्राचीन एवं अधिक से अधिक व्यापक रहा है। श्रमण एवं ब्राह्मण इन दो परम्पराओं में प्राचीन भारतीय संस्कृति का समावेश हो जाता है। श्रमण शब्द का प्राकृत रूप समण है। इसका अर्थ वृत्तिशमन तथा श्रम् अर्थात् तप करना होता हैं। श्रमण के पर्याय एवं प्रचार के तौर पर तपस्वी, तापस जैसे शब्द प्रसिद्ध हैं। इससे सूचित होता है कि श्रमण धर्म का मूल तप में है और तपको केन्द्र में रख करके ही श्रमण धर्म की परम्पराएँ विकसित हुई हैं तथा चारों ओर फैली हैं।

ब्राह्मणधर्म के मूल में ब्रह्मन् है। ब्रह्मन् अर्थात् यज्ञ को केन्द्र में रख करके ही ब्राह्मणधर्म की परम्पराओं का विकास और फैलाव हुआ है। ऐसा होने पर भी यज्ञ के साथ सम्बन्ध रखनेवाले वैदिक मन्त्र[१] और ब्राह्मण ग्रन्थों में भी तप की शक्ति एवं उसकी महिमा के सूचक तपस् शब्द का निर्देश मिलता है[२]। इतना ही नहीं, तप-अर्थ के सूचक श्रम् धातु का तप के सन्दर्भ में ही किया गया प्रयोग शतपथ जैसे ब्राह्मण ग्रन्थों में देखा जाता है[३]।

---

१. त्वं तपः परितप्याजयः स्वः। — ऋग्वेद १०.१६७.१। अधिक उल्लेखों के लिए देखो ऋग्वेद १०. १०९. ४; १०. १५४. २–४; ८. ५९. ६ तथा अथर्वेद ४. ३५. १–२ आदि।

२. एतद्वै परमं तपो। यद्वयाहितस्तप्यते परमं हैव लोकं जयति··· । शतपथ ब्राह्मण १४. ८. ११ तथा ऐतरेय ब्राह्मण २. २. ९. १. ।

३. प्रजापतिर्ह वा इदमग्र एक एवास। स ऐक्षत कथं नु प्रजायेयेति। सोऽतप्यत··· ।– शतपथ २. २. ४. १ तथा ९. ५. १. २।

आरण्यक एवं उपनिषदों में तो स्थूल यज्ञ की तरफ का झुकाव कम होने के साथ ही ज्ञान एवं तपकी वृत्ति अधिक विकासोन्मुख देखी जाती है[१]। इस तरह तो तपोमार्ग का विकास और विस्तार यज्ञमार्ग से स्वतन्त्ररूप में होता आया है तो दूसरी तरफ यज्ञमार्ग के साथ भी विकास और विस्तार होता ही रहा है।

तप का प्राथमिक और स्थूलरूप देहदमन के विविध प्रकारों में है। ज्यों-ज्यों आध्यात्मिक शुद्धि में देहदमन की उपयोगिता का ख्याल बदलता गया त्यों-त्यों इस देहदमन के विरुद्ध प्रतिक्रिया भी शुरू हुई। फलतः एक तरफ से

---

१. तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। —तैत्तिरीय उप. ३.२। अधिक उल्लेखों के लिए देखो तैत्तिरीय उप. १.९, मुण्डक १.२.११ तथा १.१.८-९, श्वेताम्वतर १.१५।

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा मान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा।
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः ।।

— मुण्डक ३.१.८

अधिक उल्लेखों के लिए देखो छान्दोग्य ३.१७.४ तथा वृहदारण्यक १.२.६ व ३.८.१.

१ बुद्ध ने कठोर देहदमन के पश्चात् वैसे तप का विरोध अपनी जीवनकथा में किया है देखो मज्झिमनिकायगत महासीहनदसुत्तन्त १.२.२.; महासच्चकसुत्तंत १.४.६. तथा अरियपरियेसनसुत्तंत १.३.६।

इसी भाँति वैदिक परम्परा में भी हम स्थूल यज्ञ में से सूक्ष्म अर्थात् मानसिक यज्ञ तरफ का विकास देख सकते हैं। द्रव्यप्रधान यज्ञ आरण्यक में ध्यानरूप मानसिक यज्ञ का रूप लेता है। उदाहरणार्थ, बृहदारण्यक में अश्वमेघ यज्ञ के स्थानपर विश्व के प्रतीकरूप से अश्व के ध्यान का उल्लेख देखा जाता है। उपनिषद् में तो ज्ञान और अन्तस्तपका महत्त्व स्पष्ट ही है। महाभारत में तप की प्रशंसा के अतिरिक्त मानसिक एवं शारीरिक तपका भेद भी दिखलाया गया है और मानसिक तपको ही श्रेष्ठ बतलाया है। (देखो महाभारत शांतिपर्व स. २१७ श्लोक १७ चित्रशाला प्रकाशन) गीता में तो केवल देहदमन के लिए स्थान ही नहीं है; परन्तु फलत्याग रूप अन्तस्त्यागपर ही स्पष्ट भार दिया गया है।

तपस् शब्द के अर्थविकास के लिए देखो एन्साइक्लोपिडिया ऑफ रिलिजन एण्ड एथिक्स भा. २ पृ. ८७ से आगे।

देहदमन की ओर का झुकाव कम होकर मानसिक अन्तस्तपकी वृत्ति बढ़ी तो दूसरी ओर से देहदमन की भावना कायम रख करके भी उसका मानसिक तप के साथ मेल जमाने का प्रयत्न हुआ। यहाँ पर हमें यह न भूलना चाहिये कि इन दोनों प्रणालियों के साथ-साथ तापस एवं परिव्राजकों का एक काफी बड़ा वर्ग देहदमन की प्रथाओं में डूबा रहता था। इनमें से प्रथम प्रकार की वृत्ति के प्रतिनिधि तथागत बुद्ध हैं[१], दूसरी के दीर्घतपस्वी महावीर हैं[२] और तीसरी के बाकी के अनेक तापस हैं[३]।

जिस तरह यज्ञ से ऐहिक एवं स्वर्गीय सिद्धियाँ प्राप्त होने की मान्यता उसके प्रसार में कार्य करती थी उसी तरह तप के प्रसार में भी वैसी मान्यता पहले ही से देखी जाती है। इसके अलावा तप अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष का भी साक्षात् अथवा परम्परागत अंग माना गया। इससे तप के प्रति जो श्रद्धा थी उसमें और भी वृद्धि हुई।

क्रमशः

---

१. स्वयं महावीर ने अनशन, शीत-ताप सहन आदि बाह्य तप करने पर भी ध्या, कषायजय आदि अभ्यन्तर तपको ही मुख्य माना है। देखो आचारांग प्रथम श्रुतस्कन्थ, उत्तराध्ययन. ३०, गा. ३० और भगवती सूत्र २५.७.८०२।

महावीर के एक समय के सहचारी गोशालक आजीवकद्वारा मान्य चार प्रकार के तप का निर्देश स्थानांगसूत्र (४.२.३०९) में मिलता है। जैसे कि- आजीवियाणं चउव्विहे तवे पं. तं—उग्गतवे, घोरतवे, रसणिज्जूहाता, जिब्भिन्दियपडिसंलीणता।

२. भगवती सूत्र ३.१ तथा ११.९ में अनुक्रम में अनुक्रम से तामलि तापस और शिवराज तापस का वर्णन आता है। वहाँ दूसरे अनेक प्रकार के तापसों का उल्लेख है। औपपातिकसूत्र में इसका विस्तृत वर्णन है।

सिंहल की राजकन्या

सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

परम उपकारी मुनिराज उस चील को मधुर ध्वनि से नमो अरिहंताणं आदि सुनाते रहे एवं आत्म-हितकर उत्तम बाते कहते रहे। चील को न केवल शांति ही मिली किंतु शांति का मूल कारण समता भी मिली। उसकी ममता गली और क्रोध भी टला।

थोड़ी देर में चील ने शांति से प्राण छोड़े। वह मर गई। पिताजी! आप जानते हैं वह कहाँ पैदा हुई? आप कहाँ से जाने? वह आपकी बेटी बनी। हाँ, मैं सुदर्शना। आपकी बेटी, चील!! मैं बीते जन्म में चील थी।

अज्ञानं व पामर दशा में अरिहंत के नाम स्मरण मात्र से मुझे राजकुल, अपार वैभव, उज्जवल प्रज्ञा और गहरी सूझबूझ मिली, तो यदि भक्ति, श्रद्धा और ज्ञान पूर्वक इन महाप्रभु की निरंतर उपासना की जाय तो अवश्य अखण्ड सुख प्राप्त हो, इसमें कोई शंका की गुंजाइश ही नहीं है। निःसंदेह शाश्वत सुख की प्राप्ति शीघ्र ही होवे।

सुदर्शना की बात सुनकर मानों सब सुन्न हो गये, किसी को इस करुण कथा पर भरोसा ही नहीं होता था। हाँ, इस दर्दीली दास्तान ने सबकी आंखों को गीला और दिल को दर्दीला जरूर बना दिया था। जैसे स्वप्न देख-सुन रहें हो ऐसा अहसास सभी को हुआ। राजा बोले;

सुदर्शना! यह सब पागलों जैसी बकवास है। ये कोई तरंग, मानसिक कमजोरी या कोई बेहोशी में देखा गया ख्वाब या खयाल है, इससे ज्यादा कुछ भी नहीं।

तूने कैसे जाना कि चील के ये हाल हवाल हुए और वह चील ही मर कर मेरे बेटी तू- सुदर्शना बनी। यह मुमकिन नहीं है।

पिताजी! वही चील हूँ मैं। मैं आपको बताती हूँ। यकीन करियेगा।

इन सेठजी के मुँह से नमो अरिहंताणं शब्द सुनते ही मैंने एकदम झटका सा अनुभव किया। मुझे अति उत्कंठा इस बारे में हुई कि सेठ जी यह क्या बोले? ये काफी परिचित होते हुए भी बड़े दूर चले गये शब्द हैं और मैं जैसे पता लगाने में मशगूल हो गयी। ज्यों-ज्यों कोशिश करती गई त्यों त्यों मानों मैं अतीत कि गहन गहराइयों में उतरती चली गई और मुझे पूर्व भव का स्मरण -जाति स्मरण ज्ञान हो आया। मैं अचेत हो ढल गई। मेरे बीते भव को मैंने बिलकुल ताजा महसूस किया। वहाँ के सुख-दुःख पीड़ा व्यथा और आनन्द की अनुभूति भी जिन्दा हो उठी।

राजकुमारी की अजीब बातों को सुनकर सभी चक्कर में पड़ गये। राजा-रानी वगैरह सोचने लगे कि क्या यह सब सच हो सकता है? हो भी तो क्या नतीजा है? सारी बेकार की बातें हैं। फिर भी राजा बोले बेटी! तुम्हारी ये सारी बातें दर्दभरी तोता मैना की कहानी से ज्यादा महत्त्व नहीं रखती। ये निराशा से भरी तथ्यहीन और व्यर्थ हैं। मानों सच भी हो तो तुझे उससे अब क्या लेना देना? इस मधुर और समृद्ध जीवन को ऐसी फिजूल की याद में कड़ुवा करने की क्या जरूरत है और इसका मतलब भी क्या? बीती हुई बातों को कोई कहाँ तक रोयेगा? आखिर यहाँ की दुःखदायी बातें यहीं पर भूलनी पड़ती है यहाँ का यहाँ ही भूलना होता है और तूं है कि न मालूम किस दुनिया कि बात को यहां जगा बैठी है!! सब व्यर्थ-फिजूल! अब तुझे क्या तकलीफ है? क्या कमी, क्या गुलामी या क्या चिंता है?

पिताजी क्या बताऊँ? कैसे बताऊं? बड़ी मुश्किल है अपनी बात दूसरों को समझाना। पिताजी दुःख कहाँ मिटा है? दुःख भुलाना तो बड़ा आसान है। दुःख भूलने से तो आत्मा भी भुलाई जाती है। यह तो अपने स्वयं के साथ धोखाबाजी है। दुःख भूलने से नहीं, दुःख कें मिटने से ही दुःख से छुटकारा होता है।

बेटी क्या पागलों की सी बातें कर रही है? तुझे क्या दुःख है? कौन सा दुःख है? सुख ही सुख तो है। हजारों नहीं, लाखों में से किसी को ही मिले ऐसी बढ़िया सुविधा तुझे मिली है। ये महल, ये वैभव, ये ठाठ, ये रूप, ये

सौभाग्य, राज्य, हम, ये तेरी माँ, ये समर्थ तेरे भाई, ये तेरी सहेलियाँ! तेरी तेज बुद्धि, अद्‌भुत कला, गुण की गरिमा। ये विद्या, ये प्रतिभा ये व्यक्तित्व! यह सब तुझे कितना अपूर्व और असाधारण मिला है। लाखों करोड़ों वर्ष तक तपस्या करने पर भी जो नहीं मिलता वह सब तुझे मिला है और तू कैसी रंजभरी और परेशानी बढ़ाने वाली बातें करती है? तुझे जो मिला है वह कितना महंगा और काम का है यह तो ख्याल कर। तू तो हारे और टूटे हुए मनुष्य की निराशा गा रही है।

नहीं पिताजी! यह बात नहीं है। ये निराशा की नहीं धर्म की बातें हैं। दरअसल जिन चीजों पर हम विश्वास और गरूर करते हैं वह एक खूबसूरत धोखा है। जो हम सजाधजा के बैठे हैं यह ताश का महल है। यह हमारी शान, और धन के ढ़ेर एक सुन्दर सपना है जो टूटने के लिए ही होता है। इस काया का क्या भरोसा। रूप भी जवानी तक ही साथ देता है। उसमें भी स्वास्थ्य अच्छा हो तो, नहीं तो मामुली बीमारी भी रूप को तहस नहस कर डालती है। ये पद-प्रतिष्ठा भी रंगभूमि के पात्रों को प्राप्त होती है, वैसी ही है। इस पर क्या इतराना और पिताजी! ये परिवार, इधर-उधर से आकर एक वृक्ष पर इकट्ठे होने वाले पक्षियों से ज्यादा महत्त्व नहीं रखता ।

यह सब सुनकर राजपरिवार एवं सभी सभासद गहरे अचम्भे में हो गये और एक दूसरे के सामने देखने लगे। इन लोगों ने आज तक कभी ऐसी धारदार और जिन्दा बातें नहीं सुनी थी और वह भी राजकुमारी जैसी सुसम्पन्न नवयुवती के मुख से!

मात्र सेठ जी- ऋषभदत्त को समझ में आया कि इसकी आत्मा जाग उठी है। अब इसे कोई ठग नहीं सकता। कुमारी की आत्मभावना एवं बौद्धिक परिपक्वता का वे मन ही मन अभिनन्दन करते रहे।

राजा बोले बेटी! ये सारी बातें छोड़। ये सब सोचने की न तो तेरी उम्र है न जरूरत है। जानबूझकर पीड़ा पैदा करने का क्या मतलब है?

पिताजी! इसी तरह गलतियाँ हो जाया करती हैं। फिर हो जायेगी गलती। नहीं। यही उम्र और उमदा अवसर है। अगर सुविधा में कल्याणकारी कदम नहीं उठा सके तो निश्चित ही असुविधा में हम अपना कुछ भी भला नहीं

कर सकते। अनादि से भटकते इस जीव की उम्र कैसे सोचियेगा? और जब मौत का ही ठिकाना नहीं तो आत्मकल्याण का वक्त और उम्र कैसे तय कर सकते हैं। ज्यों भोग में सामर्थ्य चाहिये तो योग में भी सामर्थ्य तो चाहिए ही और वह तो चढ़ती उम्र में ही मिलेगा, ढलती उम्र में तो आदमी कर ही क्या सकता है?

राजा-राजपुत्री की ये ज्ञानवार्ता चल रही थी इतने में ज्ञाननिधि नामक राजपुरोहित आये और उपाध्याय भी। सभासदों की चुप्पी व गंभीरता में उन्हें कुछ नवीनता की गंध आई। इतने में राजा बोले—

नमस्ते पुरोहितजी! आईये। ये देखिये अपनी सुदर्शना। काफी पढ़ लिख-सिख समझ आई मालूम होती है। शायद अपने पंडितजी ने पढ़ाया हो तो....

नहीं, नहीं महाराज, यह सब तो मैं भी नहीं पढ़ा हूँ– मैं क्या पढ़ाऊंगा यह तो सब अजीब ही है ... उपाध्याय ने कहा।

राजा बोले होगा, ये बात तो धर्म की करती है किन्तु इसमें भरी है कोरी निराशा। आप ही कुछ इसे समझाइये। आपके बस की बात है।

पुरोहित बोले धन्य हो। राजकन्या तेरा कल्याण हो। तुम्हारा परम सौभाग्य है कि उठती वय में धर्म पर रुचि और आस्था उत्पन्न हुई। धर्म के बिना और आसरा भी किसका है? बहुत बढ़िया है। धर्म तो तरण-तारण पारउतारण है।

वही तो मैं कह रही हूँ कि धर्म के बिना सब सहारे झूठे और अर्थशून्य हैं।

राजा बोले–हाँ, बेटी! सब सही है माना, अब तुम क्या चाहती हो?

मैं तो यही चाहती हूँ कि मैं शीघ्र ही भृगुकच्छ जाऊं पिताजी! यहाँ अपने पास तो कुछ भी नहीं है, वहाँ धर्म की सारी सुविधा और शुभसंयोग है। मेरे परम उपकारी गुरु महाराज जिन्होंने उनकी और मुझे जिन का शरण दिया था वे अरिहंतो की सेवा भक्ति में अपने जीवन को लगाऊंगी और धर्मध्यान में आत्मा को लीनकर भवसागर तिर जाऊंगी।

क्रमशः

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2230-8105/2139,

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2454-5650

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029,
Ph: (S) 2464-1186, (R) 2475-3133

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2230 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-8181-4/8780 (R) 2249-1243

SUVGYA BOYED
340, Mill Road, Apt. # 1407
Etobicolse, onterio m9 Cly8
416-622-5583

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2230-2074/8958 (D) 2230-3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2257-1697/7059 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2287-6516
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO

MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2287-9277, 2287-2826
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2237-6255

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230-0871/9372, 3022937172
(M) 9330926774

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 3288-8088/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2210-3253
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Dusaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s. B.B. Enterprises
24 Ray Street, 2nd Floor, Kolkata - 700 00
Phone : 3258-2284/9831030188

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamond
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2272-3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes
INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2230 5059 / 2230 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-
STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS
13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2287-7880, 2287-8663, Res) 2287-8128, 2287-9546

MAHENDRA TATER
Block No. 2, 3rd Floor,
45/4A, Chakraberia Road (S)
Kolkata - 700 025

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2230-7162, 2231-5540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 2287-3450/3758, 2281-1690, 2290-0514/3450
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

WITH BEST WISHES
जो एक को जानता है, वह सबको जानता है और
जो सबको जानता है, वह एक को जानता है।

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2230 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-256896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230 3142 (O) 2475 0995,
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

BIKASH CHHAJER
Director
SITAL GROUP OF COMPANIES
'Centre Point', 21, Hemanta Basu Sarani
2nd Floor, Room No. 226, Kolkata - 700 001
Phone : 2242-9265, 2210-9228, Fax : (033) 2242-9265
Mobile : 98310 22577, E-mail : finncon@vsnl.net

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

KUSUM
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3293-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

◆◆Groceries ◆◆ Edible Oils ◆◆ Personal Care ◆◆ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ◆◆Hygiene ◆◆Baby Care ◆◆Stationery ◆◆other Household Items

Stop 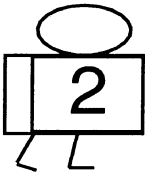 **Shop**

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

All Prices
BELOW M.R.P.

FREE HOME DELIVERY

PARKING AVAILABLE

- **28 water supply schemes**
- **315,000 metres of pipelines**
- **110,000 kilowatts of pumping stations**
- **180,000 million litres of treated water**
- **13,000 kilowatts of hydel power plants**

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park Street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area; Phase II New Delhi-110 020 Phone: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003.
Regional Office: 8/2 Ulsoor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B.C. JAIN JEWELLERS
Since 1976

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

TITTHAYARA
Vol XXX. No. 5
25th August 2006

Registered
No. SSRM/KOL./RMS/WB/ RNP - 071/2004-06
SSRM/Kol/RM /WB/RNP-070 2004-06 R.N.I. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225